वाणी जगा रही है,यादें दिला रही है
आये हैं हम कहां से,निजघर दिखा रही है

1- लाया है कौन,आया है कौन,किसके लिए है आई
खातिर अपनी रूहों के,श्री जी ने है फुरमाई
आत्म जगा रही है,निजघर दिखा रही है

2- करके मुक्त,चौदे तबक,ईश्वरी को सुध देने
ब्रह्मसृष्टि को सुख अखंड,आये हैँ घर लेने
आत्म जगा....

3-जाग्रत वचन,जगावत ततखिन,जो सिर लेवे अपने
करके प्रकाश,माया को नाश,पहुंचाती है घर अपने
आत्म जगा....

Nijanand App